लेखन में सहायक एक गतिविधि : डायरी लेखन

प्रतिभा शर्मा

बच्चों को लिखना सिखाने के लिए हम कई तरीक़े अपनाते हैं। लेखिका ने डायरी लेखन को ज़रिया बनाते हुए बच्चों को लिखना सिखाने की कोशिश की। डायरी लेखन की शुरुआत कैसे हुई; कैसे बच्चे इस प्रक्रिया में सीखते चले गए; किन मुद्दों पर उन्हें बच्चों से बातचीत करनी पड़ी; कब और किस तरह का सहयोग उन्होंने बच्चों को उपलब्ध करवाया? इन सभी बिन्दुओं पर विचार इस लेख में प्रस्तुत हैं। -सं.

जब कोरोना नामक संक्रामक बीमारी के डर से सभी काम-धन्धे, संस्थाएँ कुछ दिनों के लिए बन्द हो गई थीं, हम अज़ीम प्रेमजी स्कूल के शिक्षकों ने मिलकर यह तय किया कि बच्चों के लिखने-पढ़ने के क्रम में बाधा नहीं आनी चाहिए। हमने बच्चों से सम्पर्क किया और तय किया कि छोटे समूहों में बच्चों के साथ काम करें। यह बच्चों के मिश्रित समूह थे। उनके लिए पढ़ने की पाठ्यपुस्तकों से इतर पुस्तकालयों से किताबों की छँटनी करने का काम शुरू किया। छँटनी करते वक़्त बच्चों के कक्षा स्तर के अनुरूप किताबों का बँटवारा किया गया। ये बँटवारा या छँटनी कक्षा स्तर के अनुरूप तो थी ही, साथ में इसमें कक्षावार बच्चों के स्तर का भी सूक्ष्म रूप से ध्यान रखा जा रहा था। हमने बच्चों के लिए *बरखा* सीरीज़ की किताबों का चयन किया। इस सीरीज़ में चार स्तर और पाँच विषयवस्तुओं के अन्तर्गत चालीस किताबें हैं। इस तरह की किताबों का चयन इसलिए किया गया क्योंकि इनसे सभी बच्चों की ज़रूरतें पूरी होती हैं। बच्चा किसी भी स्तर का हो उसके लिए इनमें कुछ ख़ास है। इनमें बच्चों के स्थानीय-देशी खेलों से लेकर साधारण पारिवारिक दिनचर्या का विवरण भी है जो उन्हें किताबों से जुड़ने में मदद करता है। इससे हर बच्चा अपनी समझ के हिसाब से जो पढ़ा है, अपने दोस्तों से साझा करता है। इस तरह पढ़ने की गतिविधि से हर बच्चा जुड़ता चला जा रहा था और पढ़ने की गति को लेकर हर शिक्षक को सन्तुष्टि मिलने लगी थी। अब सवाल लिखने की गतिविधि को लेकर था।

बच्चों के लेखन पर काम

सबसे पहले ज़रूरत कुछ ऐसी गतिविधि के चयन की थी जिसमें सभी कक्षा स्तर के बच्चे बराबरी से रुचि के साथ भाग ले सकें।

लेखन की गतिविधि ऐसी हो जिसमें हर बच्चा अपनी रुचि और स्तर के हिसाब से स्वयं

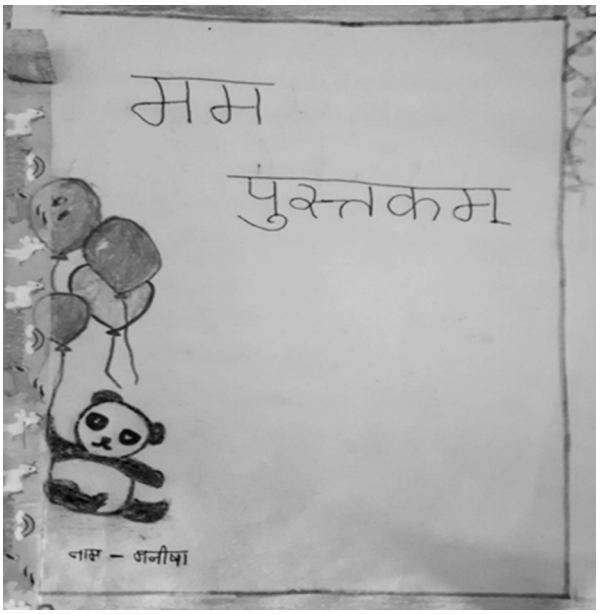

प्रेरित रहकर तो लिखे ही, साथ में लेखन कौशल के विभिन्न आधारों, यथा– लेखन की तारतम्यता, क्रमबद्धता, रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और तार्किकता, को भी बेहतर तरीक़े से समझे। इसी आधार पर सामान्य और साधारण प्रक्रिया 'दिनचर्या लेखन' को इन छोटे समूहों में शुरू किया गया। यहाँ विषयों का कोई बन्धन नहीं था। और तो और, कक्षा जैसा कोई दायरा भी नहीं था क्योंकि मिश्रित समूह बने थे। इन समूहों में कक्षा 3 से 8 तक के सभी बच्चे थे। उन्हें सिर्फ़ दिनभर की दिनचर्या को ही लिखना था, और आजकल उनके दिन कैसे बीत रहे हैं; उन्होंने किस किताब से क्या पढ़ा है; कुछ ख़ास घटित हुआ क्या; जैसे विषयों को ही अपने ज़ेहन में रखना था। बच्चों को निर्देश दिए गए कि अब सभी बच्चे अपने लिए एक डायरी बनाएँगे। वे उसे सुन्दर तरीक़े से सजा भी सकते हैं। रोज़ाना डायरी लिखने से पहले उसमें उस दिन की तारीख़ और शीर्षक भी देना होगा। बच्चों ने इन सभी बातों पर सहमति जताई। बच्चों ने अपनी-अपनी डायरी तैयार की, रंगीन कवर-जिल्द चढ़ाकर उसे सुन्दर बनाया, और फिर दिनचर्या लेखन का काम करना शुरू किया। यह काम उनके लिए बोझिल नहीं था क्योंकि जब वो लिखने बैठते थे, उनके पास वो पल और एहसास थे जिनको उन्होंने जी लिया था। इसलिए अब उनके लिए लिखना किसी विषय में बँधकर लिखने से परे आज़ादी से, और मनमाफ़िक़ लिखने से जुड़ा हुआ था। बच्चे जो लिखकर लाते उसको सभी के साथ साझा करना हमारा आगे का काम था। आमतौर पर बच्चे अपने लेखन को सबसे साझा करते थे, पर कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो अपनी डायरी में लिखे मुद्दों को साझा नहीं करना चाहते थे। इसका कारण उनके घर की परिस्थितियाँ थीं जिनमें किसी बच्चे के पिताजी का घर के माहौल को बिगाड़ना था, वहीं किसी के कुछ निजी मुद्दे थे जिनका ब्यौरा देना बच्चों ने उचित तो नहीं समझा, पर लिखा। यहाँ एक चुनौती उभरकर आई।

जब कक्षा के कुछ बच्चों ने आवाज़ उठाई कि सबको अपने काम को साझा करना है, तब मैंने डायरी के प्रकारों पर बात शुरू की। इसमें निजी डायरी और दैनन्दिनी के अन्तर पर बच्चों से बातचीत हुई। इस मुद्दे पर बातचीत के अंश यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ :

मैं : बच्चो, आप अपनी सभी बातें और मन के भावों को सब लोगों से कह सकते हैं क्या?

बच्चे : नहीं दीदी, कुछ बातें हम अपने दोस्तों से ही कहते हैं।

मैं : ऐसा क्यों?

बच्चे : दीदी, सब बातों से सबको मज़ा थोड़ी आता है।

मैं : मतलब! मैं समझी नहीं।

बच्चे : दीदी, हम गपशप करते हैं। कभी-कभी चुपके से बहुत घण्टे खेलने की योजना बनाते हैं। अगर वो सबको पता चल जाए तो हमको कोई खेलने थोड़ी दे।

मैं : क्यों नहीं खेलने देते? खेलना तो अच्छा है न!

बच्चे : अरे दीदी, सारे दिन कौन खेलने देगा! घर पर और स्कूल में काम भी तो करना पड़ता है।

मैं : हाँ, ये बात तो तुम्हारी सही है। तो देखो, तुम्हारी इस बात से मुझे ये समझ आया कि कुछ बातें आपकी निजी हैं, जैसे– खेलने की कोई योजना। इसे आप सबको बताना नहीं चाहोगे।

बच्चे : हाँ दीदी!

मैं : क्या घर की या आपके जीवन की कुछ बातें और हैं जिन्हें आप ख़ुशी-ख़ुशी सबके साथ बाँटना / साझा करना चाहते हो?

एक बच्ची : हैं न दीदी! जैसे मेरे भाई हुआ उसकी बात मैं सबको बताऊँगी।

मैं : और...

एक बच्चा : मेरे घर में अगर नई गाड़ी आएगी तो मैं मिठाई दूँगा और सबको बताऊँगा।

मैं : और कोई बात बताओ।

एक बच्चा : दीदी, मैं पढ़ाई में अच्छा रहूँगा तो सबको बताऊँगा।

सभी बच्चे : अरे दीदी, हम अपनी अच्छी बातों को सबको बताते हैं जिससे सब ख़ुश रहें।

मैं : कौन-सी बातें ऐसी हैं जिन्हें आप सबको नहीं बताते?

सभी बच्चे : जिनसे कोई ख़ुश नहीं होता, या जिनको कहने से हम भी दुखी होते हैं। जैसे– किसी के घर की लड़ाई की बात, मारने-पीटने की बात, किसी के मरने की बात... इनमें अच्छा नहीं लगता।

इसी तरह से जब हम डायरी लिखते हैं, उसमें भी दो तरह की बातें होती हैं। कुछ जो हम सबको कह सकते हैं, माने सार्वजनिक रूप से कह सकते हैं, और कुछ जिन्हें लिखकर सिर्फ़ हम अपने मन को हल्का करते हैं। जब हम परेशान हों, अपनी बात किसी से न कह पाएँ तब डायरी लिख लें। हो सकता है हमें लगे, हमने अपनी बात को किसी से कह दिया है। इस तरह की बातचीत से बच्चे डायरी लेखन और उसके साझाकरण के भेद को समझ चुके थे। यहाँ उनके साथ डायरी के और भी प्रकारों की बात हुई। इनमें शिक्षकों के द्वारा बनाई जाने वाली योजना डायरी, किसी व्यापारी के लिए अपने कामों को ध्यान रखने के लिए बनाई जाने वाली डायरी, घर में मम्मी-पापा द्वारा घर के सामानों, दूध का हिसाब रखने, अख़बार, बिजली, पानी के हिसाब की डायरी, मकान बनाने वाले ठेकेदार की डायरी (क्योंकि मकान

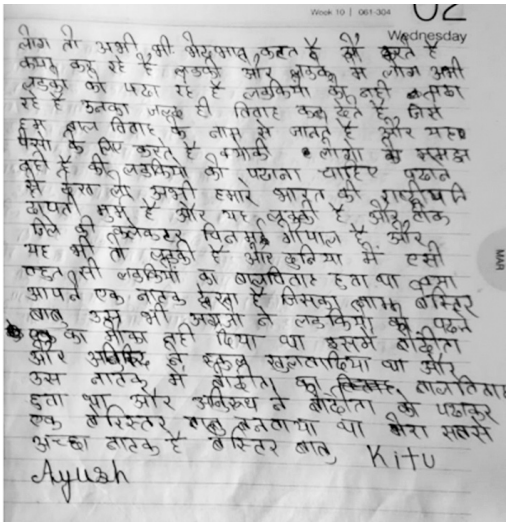

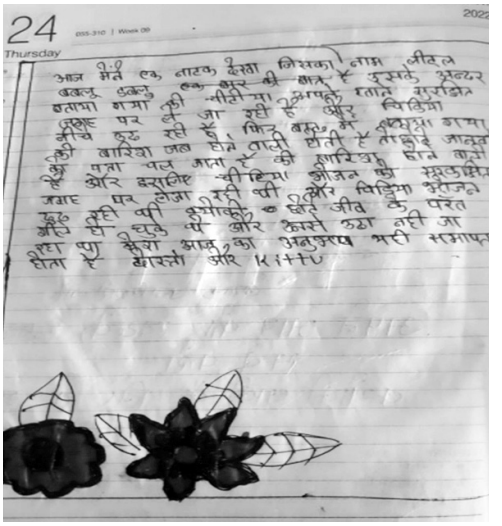

बनाने का काम बमोर में अधिक किया जाता है), आदि का ज़िक्र किया गया। ये सूचीकरण मैंने और बच्चों ने मिलकर किया।

डायरी के प्रकारों की बात के बाद, काम को विभाजित करने की सोच के साथ अगली कक्षा की योजना बनाई गई। इसमें प्राथमिक और उच्च प्राथमिक बच्चों की दिनचर्या साझाकरण से आगे अनुभव लेखन तक ले जाना था। अब यहाँ भी हमारे सामने एक चुनौती थी। अभी ज़्यादातर बच्चे दिनचर्या को ही साझा कर रहे थे। जैसा कि मैंने बताया, ये मिश्रित समूह थे जिनमें प्राथमिक और उच्च प्राथमिक के बच्चे शामिल थे, लेकिन प्राथमिक और उच्च प्राथमिक के लेखन में कोई बड़ा अन्तर नज़र नहीं आ रहा था। इसलिए पहले हर स्तर समूह के लेखन को मौखिक रूप से बच्चों को सुनाया गया, और उसपर पूछा गया कि क्या उनको दिनचर्या लेखन के स्तर पर कुछ अन्तर लग रहा है। इसे सुनने के बाद सभी को ये तो समझ आ ही गया था कि सब एक जैसी शैली में ही लिख रहे हैं। अब आगे का काम कुछ ख़ास बातों को लिखने का था। माने, सोचकर लिखने के लिए ख़ुद से कोई सन्दर्भ ध्यान रखने थे। यहाँ सोचनाभर ही प्रक्रिया का हिस्सा नहीं था, बल्कि लिखने के लिए रचनात्मक भी बनना था। इसी सोच को विकसित करने के लिए उन्हें अब पुस्तकालय की किताबों से चुने हुए डायरी के अंश पढ़ने के लिए दिए गए। इनमें *एन फ्रैंक की डायरी, दिनकर की डायरी, निराला की डायरी, डायरी के पन्ने,* आदि मुख्य थे। इनके साथ-साथ बच्चों के द्वारा पढ़ी जाने वाली कहानी की किताबों से पढ़े अंशों के कुछ ख़ास हिस्सों के विषय में लेखन की बात को अपनी योजना का हिस्सा बनाया गया।

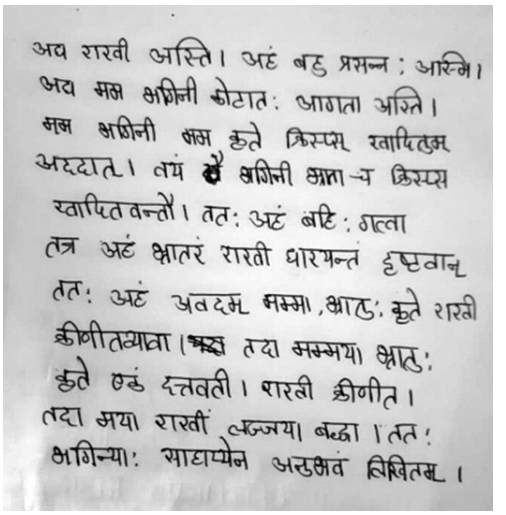

डायरी लेखन में अब बच्चों के निजी अनुभवों के साथ-साथ पठित पुस्तकों के अंश, कहानी के पात्रों की विवेचना, कुछ ख़ास घटनाओं की बात, किसी जगह घूमने / यात्रा का वर्णन, अपने जन्मदिवस को मनाने का अनुभव, किसी ख़ास दोस्त को अपनी भावनाएँ बताना, अपने पालतू जानवर की यादों को दर्ज करना, आदि लेखन में आने लगे थे। यहाँ प्राथमिक स्तर के कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिनको अभी लिखना कम आता था, पर वे एक-दो लाइन लिखकर चित्रात्मक

अद्य राखी अस्ति। अहं बहु प्रसन्नः अस्मि।
अद्य मम भगिनी कोटातः आगता अस्ति।
मम भगिनी मम कृते क्रिस्प्स खादितुम्
अददात्। वयं भगिनी भ्राता च क्रिस्प्स
खादितवन्तौ। ततः अहं बहिः गत्वा
तत्र अहं भ्रातरं राखी धारयन्तं दृष्टवान्
ततः अहं अवदम् मम्मा, भ्रातुः कृते राखी
क्रीणीतव्या। तदा मम्मया भ्रातुः
कृते एकं दत्तवती। राखी क्रीणीत।
तदा मया राखी लज्जया बद्धा। ततः
भगिन्याः साहाय्येन अनुभवं लिखितम्।

तरीक़े से अपनी बात कहने को तैयार रहते थे। जब उनको लिखने के लिए काम दिया जाता, वे चित्र बनाने की इच्छा ज़ाहिर करते थे। उच्च प्राथमिक कक्षा स्तर के भी बहुत-से बच्चे अपनी डायरी में चित्र बनाने के साथ अपने विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त करते थे। इससे मेरी योजना में निहित उद्देश्य भी धीरे-धीरे पूरे हो रहे थे। डायरी लेखन से पढ़ना-लिखना सिखाने, और जिनको पढ़ना-लिखना आता है उनके पढ़ने-लिखने को दुरुस्त करने के साथ-साथ और भी उद्देश्य इस प्रक्रिया में निहित थे, जो इस प्रकार थे :

- स्वतंत्र लेखन के लिए अवसर देना;
- बच्चों को पुस्तकालय से जो किताबें दी गई हैं उनके मुख्य बिन्दुओं, पात्रों, घटनाओं को समझते हुए अपने-आप से जुड़ाव बनाते हुए अनुभवों को लिखना;
- बच्चों को चित्रात्मक-रचनात्मक लेखन के अवसर देना;

- विभिन्न विधाओं की कलात्मकता और रचनात्मकता को समझते हुए उनकी शैली से परिचित होने का मौक़ा देना;
- लेखन की जटिल प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाना; आदि।

इन सभी बिन्दुओं पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उनके साथ मिलकर भी काम किया। कभी उनसे कहा कि आज सभी कक्षा में बैठकर ही अपनी डायरी लिखेंगे। उनके साथ बैठकर मैंने भी डायरी लिखी, और उनसे साझा की। इस तरह, हर दिन कुछ नया जोड़ते हुए इस काम को आगे बढ़ाया जाने लगा। एक दिन मैंने बच्चों को आँखें बन्द करने को कहा, और उन्हें ऑडियो से संगीत की मधुर धुन सुनाई। यह धुन मॉर्निंग रागा से सम्बन्धित थी। इसके पीछे उद्देश्य था– अपने मन के भाव या अनुभव को लिखने का अभ्यास करना। जब धुन पर बात करना शुरू किया, और जानना चाहा, कुछ बच्चों के अनुभव ऐसे थे कि उन्हें तो कुछ महसूस ही नहीं हुआ! मैं एक बार तो आश्चर्यचकित और सकते में थी कि अब कैसे इनको फ़ीलिंग्स या भावों को महसूस करना सिखाऊँ। फिर दूसरे बच्चे से उसके अनुभव को सुना। उसने बताया कि उसे संगीत सुनकर लग रहा था जैसे दूर पहाड़ों के ऊपर से चिड़ियाँ उड़कर कहीं जा रही हैं, और नीचे कहीं झरना बह रहा है। इसी तरह एक अन्य बच्चे ने उसी धुन पर कुछ अलग-सा अनुभव सुनाया। उसने कहा कि एक बच्चा स्कूल जाने को तैयार हो रहा है, और अपनी मम्मी से उसे स्कूल छोड़कर आने की ज़िद कर रहा है। किसी ने बताया कि बहुत-से मज़दूर काम पर निकल रहे हैं। अब मैंने बच्चों के साथ फिर से बातचीत शुरू की। उनसे बात करते हुए मैंने कहा, "ज़रूरी नहीं, हमें सब देखकर कुछ अनुभव हो, और हम लिखने लगें। कभी हमें कुछ सामान्य बात भी लग सकती है। यानी, अनुभव के लिए बाध्यता नहीं है। इसलिए डायरी को भी बिना बाध्यता के लिखना ही बेहतर है।" आज की कक्षा से मुझे भी यह महसूस हुआ कि हर व्यक्ति अपने-आप में ख़ास है। उसके विचार करने, अभिव्यक्त करने के तरीक़े और महसूसियत अलग-अलग और अपने-आप में अनूठी होती है। इसलिए बच्चों के लिए स्वतंत्रता का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है ताकि वो अपनी गति और सोच-समझ के साथ आगे बढ़ सकें। बच्चों की समझ को आधार बनाकर उन्हें सीखने के मौक़े देने होंगे। इस तरह से बच्चे अब जब उन्हें कुछ ख़ास लगता है तब कुछ अनोखा लिखते और उसे साझा करते हैं। यहाँ से सुनते हुए और डायरी के अंश पढ़ते हुए उनकी डायरी में अब अनुभव आने लगे थे। कुछ बच्चे किताबों से जुड़े

मम दिनचर्या

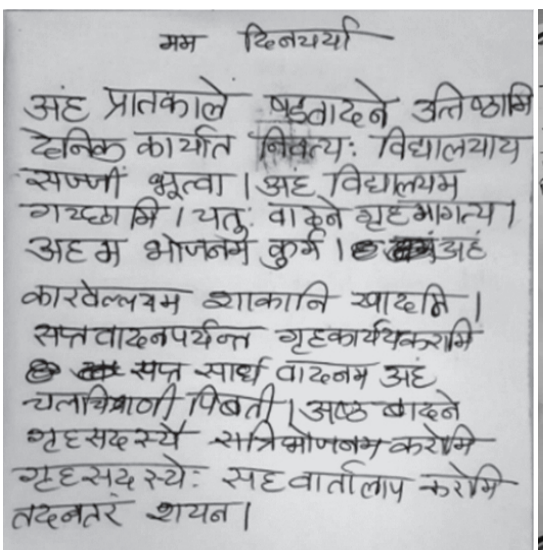

अहं प्रातकाले षड्वादने उत्तिष्ठामि
दैनिक कार्याणि निवृत्य: विद्यालयाय
सज्जी भूत्वा। अहं विद्यालयम
गच्छामि। चतु: वादने गृहम् आगत्य।
अहम भोजनम् कुर्म। अहं
कारवेल्लम शाकानि खादामि।
सप्तवादनपर्यन्त गृहकार्यम्करोमि
सप्त सार्ध वादनम अहं
चलचित्राणी पिबती। अष्ठ वादने
गृहसदस्यै सात्रिभोजनम् करोमि
गृहसदस्यै: सह वार्तालाप करोमि
तदनतरं शयन।

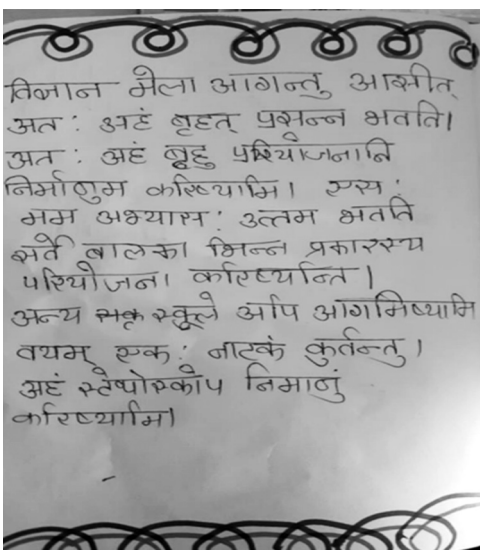

विज्ञान मेला आगन्तु आसीत
अत: अहं बृहत् प्रसन्न भवति।
अत: अहं बहु परियोजनानि
निर्माणम करिष्यामि। एष:
मम अभ्यास: उत्तम भवति
सर्वे बालका भिन्न प्रकारस्य
परियोजना करिष्यन्ति।
अन्य स्कूले अपि आगमिष्यामि
वयम् एक: नाटकं कुर्वन्तु।
अहं स्टेथोस्कोप निमाणं
करिष्यामि।

अनुभव लिखते थे, वहीं कुछ पात्रों के चरित्र की ख़ास बातों का ख़ुलासा करते थे। इस तरह से अब औसत बच्चे दिनचर्या लेखन से अनुभव लेखन पर आ गए थे। यह उनकी शब्दों के चयन की शक्ति, कल्पनाशक्ति, बिन्दास विचार अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए पर्याप्त साधन का काम कर रहा था। अब बच्चे लगभग रोज़ाना लिख रहे थे।

स्कूल खुलने के बाद

स्कूल खुलने के बाद भी बच्चे डायरी लिख रहे थे, पर अब प्रतिदिन केवल 4-5 बच्चों की डायरी ही साझा हो पाती थी। हमने इस अभ्यास को यथावत रखने के लिए स्कूल स्तर पर बात की, और सप्ताह में एक दिन लिखी गईं डायरियों से कुछ ख़ास पन्ने बालसभा में साझा करने का प्रयास किया। शनिवारीय बालसभा में हम सभी बच्चों की डायरियों के साझा किए जा सकने वाले कुछ ख़ास पन्ने डिस्प्ले बोर्ड पर सजाते। इस प्रक्रिया में सभी बच्चे शामिल हो रहे थे, और लेखन का लगातार स्वतंत्र अभ्यास करते जा रहे थे।

अब इसी तरह का अभ्यास दूसरी भाषाओं में भी होने लगा है। इसमें हमारी तीसरी भाषा संस्कृत भी शामिल है। वर्तमान में बच्चों की रुचि संस्कृत में डायरी लेखन के प्रति जागृत की जा रही है। हिन्दी और संस्कृत शिक्षिका के रूप में मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं इस प्रयास को लगातार आगे बढ़ाती चलूँ, और भाषा में उनके लेखन को सहज और सरल बनाऊँ।

बच्चों द्वारा लिखी गई डायरी के कुछ पन्ने यहाँ संलग्न कर रही हूँ आप देखिए

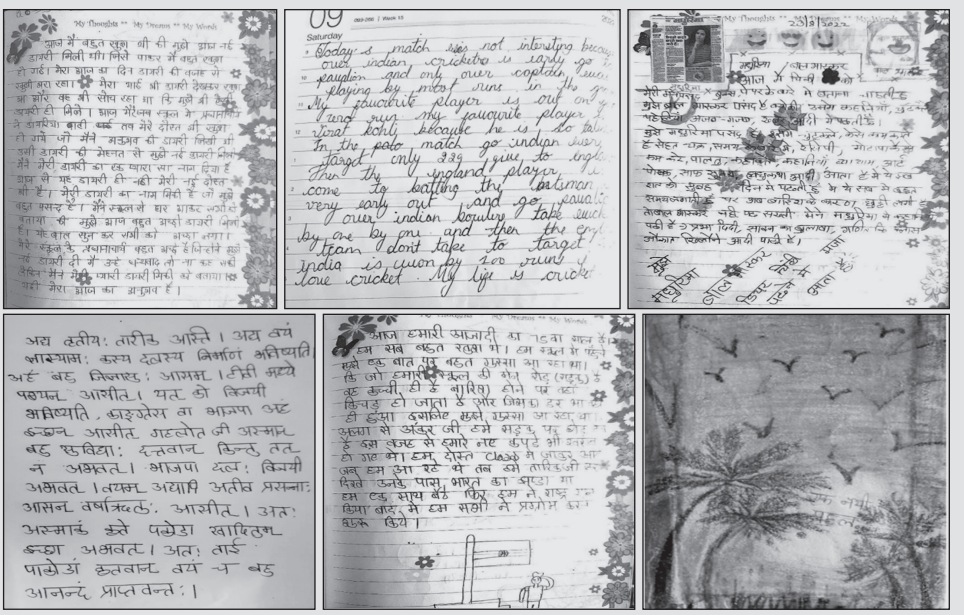

डॉ प्रतिभा शर्मा शिक्षा के क्षेत्र में 15 वर्ष से काम कर रही हैं। उन्होंने मानस गंगा सीनियर सेकेंडरी स्कूल (बोध शिक्षा समिति कूकस) में 6 वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। प्रतिभा ने केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के जयपुर परिसर से संस्कृत भाषा में पीएचडी और बीएड की शिक्षा प्राप्त की। संस्कृत विषय पर लिखे उनके कई लेख संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। शिक्षा सम्बन्धी लेख 'टीचर्स ऑफ़ इंडिया' पोर्टल पर भी प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी स्कूल टोंक, राजस्थान में अध्यापन कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : pratibha.sharma@azimpremjifoundation.org